NH Notes - 02

"गढ़ी"

जाटों की युद्ध व् सुरक्षा प्रणाली की अनूठी ऐतिहासिक व्यूहरचना

"गढ़ी" जाटों की युद्ध-सुरक्षा प्रणाली की ऐसी अनूठी व्यूहरचना जिसकी वजह से "भरतपुर" रियासत मुग़ल व् अंग्रेजों के शासनकाल में भी अजेय रही और कहलाई लोहागढ़|

जाट साम्राज्य के वैभव व् संचालन में गढ़ियों का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। जब विदेशी लुटेरे भारत को लूटने आया करते थे, तब जाट खाप उनसे लड़ा करती थी। जिसके लिए हर 10-20 गांव मिलकर जंगलो में कच्ची गढ़ी बना लेते थे| अति-वृद्धों और बच्चों को गढ़ी में छोड़कर, जवान जाट विदेशी लुटेरों से लड़ने के लिए गांव में रुक जाते थे और दुश्मन से युद्ध कर दुश्मन को छिन्न-भिन्न, क्षत-विक्षत कर उनको लूट लेते थे। युद्ध के समय खजाना भी गढ़ियों में सुरक्षित रखा जाता था। गढ़ियों में कई महीनों के लिए रसद जमा रहती थी।

गढी जाट युद्ध आर्किटेक्चर का एक बेहतरीन उदाहरण है। ये कच्ची गढ़ियां महिने भर में तैयार हो जाती थी और तोप के गोलों तक को आसानी से झेल लेती थी। गढ़ियों को देखकर ही लोहागढ़ का किला भी मिट्टी की दिवारों से बना, जिसकी दिवारों पर तोप का कोई असर नहीं होता था। और इसी वजह से चार महीनों के अथक प्रयासों के बावजूद अंग्रेज भरतपुर रियासत को नहीं तोड़ सके|

दिल्ली लाल किले के पास भी एक पक्की जाट गढ़ी यमुना के पास बिल्कुल लालकिले से सटकर बनी है। आजकल सरकार ने इसमे सेना की एक टुकड़ी का कैम्प बना रखा है और इसकी पहचान लगभग लुप्तप्राय हो चली है। मोरी गेट से राजघाट जाते वक्त लोहे के पुल की साइड मे अंग्रेजी जमाने की एक टाइल लगी हुई है जिसमें जाट गढ़ी नाम से इमारत की पहचान की गयी है। यह गढ़ी महाराजा जवाहर सिँह का साथ देने आयी खाप सेना ने बनायी थी और कई महीनो तक खाप सेना यहाँ रुकी रही और इस तरह मुगल सेना को बाहर निकलने पर मजबूर कर दिया था। आज इसके सभी दरवाजे स्थायी रुप से बंद कर दिये गये है। इसमें जाने के लिए लालकिले के अंदर से रास्ता है। गढ़ी के अन्दर लालकिले का रेलवे स्टेशन भी है जो अब बंद है। यह गढ़ी इस बात का प्रमाण है कि जाटों की खापों ने दिल्ली को जीतने के लिए किस तरह से घेरेबंदी की और उस वक्त दिल्ली जीती।

ब्रज में गढ़ियों का प्रचलन औरंगजेब के काल में शुरु हुआ जब गोकुला जी महाराज के नेतृत्व में जाटों ने मुगलों के खिलाफ तलवार उठाई, तब जाट किसान जंगलों में बच्चों और अति-वृद्धों को सुरक्षित रखने के लिए कच्ची गढ़ी बना देते थे।

खापलैंड के के दिल दिल्ली के चारों ओर आदिकाल से गढ़ियाँ पाई जाती हैं| आज भी आपको खापलैंड में गढी नाम के गांव मिल जायेगें| उदाहरण के तौर पर भरतपुर में बदनगढ़ी, पानीपत में सीवाह गढ़ी, बागपत में हजूराबाद गढ़ी, रोहतक में गढ़ी सांपला, गढ़ी टेकना, करनाल में गढ़ी बीरबल, गढ़ी रोडान, हिसार में राखी गढ़ी, जींद में गढ़ी बधाना आदि-आदि।

हवाला: अभिषेक लाकड़ा

Author: Phool Kumar Malik

Publisher: Nidana Heights

Dated: 23/06/2014